# ROMAN 6

## Hindi Bible Class - Pr.Valson Samuel

रोमियो की पत्रि आठवें अध्याय का पहला पद पढ़िए। **सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।** तो यह इस प्रकार है: "मसीह यीशु में अब उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं, जो आत्मा के अनुसार चलते हैं, न कि शरीर के अनुसार।" एक सच्चाई दर्ज की गई है कि जो लोग आत्मा के अनुसार चलते हैं, शरीर का अनुसार नहीं । जब कोई वास्तव में मसीह यीशु में होता है तो वह शरीर के अनुसार नहीं परन्तु आत्मा के अनुसार चलता है। इसे दूसरे तरीके से कहें तो, "मसीह यीशु में कोई दण्ड नहीं है, जो आत्मा में चलता है, और शरीर में नहीं।" तब सत्य की आत्मा का वह महान कार्य, जो परमेश्वर के पवित्र आत्मा ने हमें दिया है, हम में मसीह यीशु के द्वारा बनाया जाएगा। In Christ. मसीह के बिना यह जीवन जीना असंभव है। इसलिए आत्मा का हम में वास करने का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य हमें मसीह में लाना है। यह रोमियों की पत्री या परमेश्वर के वचन में एक बहुत ही महत्वपूर्ण अध्याय है।रोमियों 8. जैसा कि हम रोमियों अध्याय 8 के पहले पद से अध्ययन करते हैं, जब हम इसका अध्ययन आध्यात्मिक यात्रा के रूप में करते हैं तो यह हमें लाता है आठवां अध्याय उनतीसवें पद में है। **क्योंकि जिन्हें उस ने पहिले से जान लिया है उन्हें पहिले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे।** तब प्रभु यीशु को मसीह के स्वरूप के अनुरूप होने के लिए पूर्वनियत किया जाता है। जो बात हमें उस जीवन में लाती है, वही है जो हमने रोमियों की पत्री के पिछले अध्यायों और रोमियों के आठवें अध्याय में सीखी थी जिसका हम अभी अध्ययन करने जा रहे हैं। लेकिन यह हमारे महिमामंडन के साथ है कि हम पूरी तरह से अनुपालन करते हैं। वह क्षेत्र हमें इस अध्याय में संक्षेप में सूचित करता है। लेकिन जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, इस मामले की पूरी सच्चाई हमारे सामने तब आती है जब हम इब्रानी शास्त्रों का एक साथ अध्ययन करते हैं। जब हम रोमियों के आठवें अध्याय का दूसरा पद पढ़ते हैं **क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।** फिर हमें बाहर क्या दिया है यानी कागज के एक टुकड़े पर लिखा हुआ शब्द जो हमारे हाथ में दिया जाता है वह शब्द वह है जो हम आत्मा में प्राप्त करते हैं, जीवन की आत्मा की व्यवस्था। फिर हमरोमियो की पत्रि सातवें अध्याय के छठे पद **परन्तु जिस के बन्धन में हम थे उसके लिये मर कर, अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए, कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं,**

**वरन आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं॥** आत्मा। 2 कुरिन्थियों के तीसरा अध्याय का तीसरा पद पढ़ें। **2 Corinthians 3:3**

**3 यह प्रगट है, कि तुम मसीह की पत्री हो, जिस को हम ने सेवकों की नाईं लिखा; और जो सियाही से नहीं, परन्तु जीवते परमेश्वर के आत्मा से पत्थर की पटियों पर नहीं, परन्तु हृदय की मांस रूपी पटियों पर लिखी है।** तो दोनों में यही अंतर है। स्याही में लिखा एक शब्द, कागज पर लिखा हुआ शब्द, पत्थर की पटिया पर लिखा हुआ शब्द। परन्तु जीवते का वचन जीवन के आत्मा की व्यवस्था है, और वह जीवते परमेश्वर के आत्मा के द्वारा लिखा गया है। यह परमेश्वर का वचन है जो हमारे भीतर लिखा है, पत्थर की पटिया पर नहीं, बल्कि हृदय की मांस की थाली पर। जब दूसरा कुरिन्थियों ने तीसरे अध्याय के छटे पद के दूसरे भाग को पढ़ा **क्योंकि शब्द मारता है, पर आत्मा जिलाता है।** यदि हम केवल पत्र पर भरोसा करते हैं, तो हम आत्मा की सेवकाई को नहीं जानते हैं वे अनजाने में हमें मार रहे हैं। यदि एक संगति में परमेश्वर का सेवक लगातार देह के दायरे से वचन का प्रचार करता है, तो जो उसमें हैं वे मर रहे हैं। यही है ना वह है मृत्यु सेवा। परन्तु जब परमेश्वर का सेवक इस वचन को आत्मा में ग्रहण करता है और आत्मा के जीवन में रहता है और आत्मा में उस जीवन की आत्मा की शिक्षा देता है, तो वहीं वचन मरे हुओं को भी जीवन देता है। तब हमें जीवन की आत्मा के सिद्धांत और लिखित वचन के बीच के अंतर को समझना चाहिए। यह कहने का कि व्यवस्था में जीवन नहीं है, इसका यह अर्थ नहीं है कि व्यवस्था में जीवन नहीं है। यदि कोई उन्हें आत्मा में ग्रहण नहीं करता है, तो उस व्यवस्था का कोई जीवन नहीं है। भाव से ग्रहण करना चाहिए।यह रोमियों अध्याय आठ का दूसरा पद है **क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।** यहाँ हम दो सिद्धांत देखते हैं: जीवन की आत्मा की व्यवस्था, और पाप की व्यवस्था। सातवें अध्याय में हम व्यवस्था देखते हैं और उसमें लिखा हुआ वचन आत्मा के राज्य में नहीं, परन्तु कागज पर लिखा हुआ वचन है। व्यवस्था और साथ ही बुद्धि का नियम मन, विवेक के भीतर का नियम है। फिर हम यहाँ चार दस्तावेज़ देखते हैं व्यवस्था, समझ की व्यवस्था, पाप की व्यवस्था, और जीवन के आत्मा की व्यवस्था। सातवें अध्याय में मन की व्यवस्था और पाप की व्यवस्था के बीच युद्ध है।अर्थात्, रोमियों अध्याय सात में, पद तेईस **परन्तु मुझे अपने अंगो में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है** पाप का सिद्धांत मुझे पाप के अधीन करता है, मेरा शरीर पाप और बंधन के अधीन है। हम वहां प्रचलित बुद्धि के सिद्धांत को नहीं देखते हैं जीतना पाप का नियम है। तब पाप की व्यवस्था पर जय पाने के लिए केवल एक ही व्यवस्था है, और वह है जीवन के आत्मा की व्यवस्था। केवल वही व्यवस्था जो हम में आत्मा में लिखी हुई है, पाप की व्यवस्था पर विजय पा सकती है। सच्चाई यह है

कि परमेश्वर के बच्चों का एक बड़ा समूह पाप में जी रहा है, क्योंकि वे पाप पर विजय प्राप्त नहीं कर सके, यह वचन में जीवन की आत्मा की व्यवस्था के रूप में नहीं लिखा गया है। यह उसके लिए परमेश्वर के सामने नहीं बैठता है। जो लोग आत्मा में चलना शुरू करते हैं, वे हमारी बाइबल के वचनों को आत्मा की व्यवस्था के रूप में ग्रहण करेंगे। तब अवश्य ही कुछ माँग होनी चाहिए, अर्थात् आत्मा के अनुसार चलना। हमें शुरुआत में 100% में बटा नही हो सकता क्योंकि यह क्रमिक विकास है। यही आध्यात्मिक विकास है। जब हम वचन प्राप्त करते हैं, तो वचन हमें उसके अनुसार दिया जाता है। पहला पतरस के दूसरे अध्याय के दूसरे पद **नये जन्मे हुए बच्चों की नाईं निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ।** यह पहला है। वह भी आत्मा में ही खोजना होगा। लेकिन यह इतना ठोस भोजन नहीं है जो हमें उद्धार के लिए बढ़ने के लिए शब्द का शुद्ध दूध देता है। और विकास का क्षेत्र। जैसे-जैसे यह बढ़ता है, वैसे ही शब्द भी होता है। हम वचन में ठोस भोजन देखते हैं। मैं क्रूस का वचन देखता हूं, जैसा कि मुझे अंत के दिनों की याद दिलाई गई है, न्याय का शब्द, उच्चतम स्तर का शब्द। दूसरा कुरिन्थियों अध्याय 4 पद चार में **और उन अविश्वासियों के लिये, जिन की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।** हम पहले से ही स्वर्गीय देखते हैं, वह स्वर्ग की कामना करता है, स्वर्ग में प्रवेश करता है और स्वर्ग को प्राप्त करता है। फिर एक आध्यात्मिक विकास होता है जिसे हम देखते हैं। यह परमेश्वर की आत्मा है जो हमें वहां बढ़ने में मदद करती है। यह सत्य का आत्मा और परमेश्वर का वचन है जो हम में वास करता है। और इसलिए यह हमारी धन्य संगति और हमारी आध्यात्मिकता के साथ हमारे संबंध के साथ है कि हम आध्यात्मिक रूप से विकसित होते हैं। हम उस वृद्धि को प्राप्त करते हुए पाप की परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर रहे हैं। वहाँ हम जीवन में बहुतों की पापमय प्रवृत्तियों पर विजय पाते हैं, जीवन शैली बदलती है, समुदाय बदलते हैं, प्रार्थना जीवन बदलते हैं यह सब विकास के लिए नीचे आता है और हम इन सभी क्षेत्रों में वृद्धि या अंतर देखना शुरू करते हैं। तो इस प्रकार हमारी आत्मा जीवन की आत्मिक के सिद्धांत से भर जाती है। इसके द्वारा ही हम मसीह यीशु में पाप और मृत्यु के सिद्धांत से स्वतंत्रता प्राप्त करते हैं। ऐसे जीवन में सत्य की आत्मा बहुत सक्रिय होती है। हमारी आत्मा एक ऐसा जीवन है जो आंतरिक मनुष्य के निकट संपर्क में रहती है। इस प्रकार, वचन हमारे प्राणों को भरपूर जीवन से भर देता है। यही वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम एक पूर्ण मानव के रूप में विकसित होते हैं। जब हम रोमियो की पत्रि आठवें अध्याय का तीसरा पद पढ़ते हैं **क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के**

**लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।** यही प्रभु यीशु मसीह की पार्थिव सेवकाई है। तब व्यवस्था शरीर की दुर्बलता के कारण ऐसा नहीं कर सकी। हम पढ़ते हैं कि व्यवस्था पवित्र है, व्यवस्था आध्यात्मिक है, लेकिन मानव शरीर इससे सहमत नहीं है। **क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।** जब हम रोमियों की पत्री के छठे अध्याय का छठा पद पढ़ते हैं **क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।** हमारे प्यारे प्रभु ने क्रूस पर यही किया। जब हम सभी के पापों को अपने शरीर में वहन करते हुए अंतिम आदम को क्रूस पर चढ़ाया गया था। जब वे लोग जो मसीह में परिवर्तित होने के लिए बपतिस्मा लेते हैं, इसके आध्यात्मिक संदेश को समझते हैं और एक व्यवस्था में आते हैं जो कि परमेश्वर भी है यह वचन के अनुसार जीने का नियम है - परमेश्वर हमें सत्य की आत्मा देता है। लेकिन यह तब होता है जब हम आत्मा की आज्ञाकारिता में रहते हैं - जब व्यवस्था पुराने नियम में इस्राएल के बच्चों के लिए एक मृत दस्तावेज बन गया यह परमेश्वर के बच्चों, नए नियम के विश्वासियों के लिए जीवन की व्यवस्था होगी। सत्य की आत्मा ही हमारी आत्मा है। प्रभु यीशु मसीह इस पृथ्वी पर आए, मर गए, गाड़े गए, जी उठे और पिता के पास गए ताकि हम सत्य की आत्मा को प्राप्त कर सकें। उसका पहला कार्य पिता के पास जाना है और प्रायश्चित या प्रायश्चित के बाद, अगला कार्य पवित्र आत्मा को हमारे पास भेजना है।यदि आज हमारे पास पवित्र आत्मा नहीं होता, तो प्रभु क्रूस पर जो कुछ भी नहीं कर सकते थे, वह हमारे लिए एक वास्तविकता बन जाता। जो कार्य प्रभु ने क्रूस पर किए थे, वे हमारे पास कभी नहीं आ सकते थे। क्योंकि यदि हम अपराध बोध की भावना रखना भी चाहते हैं, तो भी हमारे पास केवल पवित्र आत्मा ही हो सकती है। यह सत्य का आत्मा है जो हमें पाप, धार्मिकता और न्याय के बारे में जागरूक करता है। पवित्र आत्मा हमें वचन के द्वारा पश्चाताप की ओर ले जाता है। पवित्र आत्मा हमें विश्वास के बपतिस्मे की ओर ले जाता है। तब पवित्र आत्मा उन लोगों में वास करना चाहता है जो बपतिस्मा लेते हैं। एक बार जब आत्मा भीतर आ जाती है, तब हम आत्मा के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता का जीवन जीते हैं, जिसमें आत्मा हमें वह सब देता है जो मसीह यीशु के द्वारा हमारे लिए उपलब्ध है। यूहन्ना के सुसमाचार के सोलहवें अध्याय में जब हम मसीह यीशु में परमेश्वर की परिपूर्णता में रहते हैं, जब स्वर्ग की सारी आशीषें हमें दी जाती हैं, तो यह परमेश्वर का पवित्र आत्मा है जो इसे हमारे पास लाता है। आत्मा सब बातें सिखाता है, और आत्मा सब सत्य की ओर ले चलता है, यह आत्मा के माध्यम से है कि हम परमेश्वर की बुद्धि, ज्ञान, दिव्य सलाह, भक्ति और ज्ञान प्राप्त करते हैं। फिर हमारे

लिए इसे संभव बनाने के लिए, प्रभु यीशु पाप के शरीर में, इस पृथ्वी पर आए, और आदमिक मनुष्य को सूली पर चढ़ा दिया। रोमियों अध्याय आठ, पद चार बहुत ही महत्वपूर्ण पद है **इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।** जब पूर्ति की बात आती है तो पूर्ति एक बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द है। आइए हम मसीह के जीवन से एक या दो पद पढ़ें।मत्ती तीसरा अध्याय पंद्रह पद। **यीशु ने उस को यह उत्तर दिया, कि अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है,** आइए हम व्यवस्था के न्याय को पढ़ें और अमल करें। तब परमेश्वर की वह धार्मिकता जो व्यवस्था में है, आत्मा के द्वारा पूरी होती है। इतने सारे लोग आज इसके बारे में नहीं जानते हैं क्योंकि यह व्यवस्था क्या है इसकी कोई सही शिक्षा नहीं है।इसलिए कि इस व्यवस्था को खत्म कर देना चाहिए। अर्थात्, मूसा की पुस्तक, भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक और भजन संहिता पुराने नियम को अस्वीकार करने की स्थिति में हैं। यह पुराना नियम नहीं है, यह परमेश्वर का वचन है, ह पुराना नियम पत्थर में लिखा गया एक दस्तावेज है, पुस्तक में लिखा गया दस्तावेज Old Testement है। नया नियम हमारे भीतर आत्मा में लिखा हुआ दस्तावेज है। यह अब इन 27 पुस्तकों में प्रभु की शिक्षा है, और यदि यह यहीं है तो यह पत्थर में लिखा हुआ दस्तावेज है, पुस्तक में लिखा हुआ दस्तावेज है। हम जिस पुराने नियम की बात कर रहे हैं और जिस नए नियम की हम बात कर रहे हैं, उसमें कोई अंतर नहीं है। Old Testement और New Testement किसने लिखा? क्योंकि यह सब एक व्यवस्था है। परमेश्वर की आवाज। तब यीशु मसीह धरती पर आए, उन लोग आत्मा में वचन प्राप्त नहीं किया। जब यह मूसा को दिया जाता है, तो यह पत्थर में लिखा होता है। हमारे पास अभी भी कागज पर है। लेकिन हमारा भाग्य उन लोगों के लिए है जो आत्मा की आज्ञाकारिता के अधीन हैं, इसे जीवन की आत्मा के दस्तावेज के रूप में लिखा जाएगा। फिर जब मुझे पुराने नियम को पूरा करने के लिए कहा गया, तो याद दिलाया गया कि बलिदान के सभी नियम पूरे किए गए थे। बलिदान नियम वह निर्दोष भेड़ का बच्चा था। यह एक तैयार बर्तन था, एक तैयार शरीर। परमेश्वर आपने मुझे एक शरीर दिया है। मेम्ने की नाईं जब वह बलि करके वेदी पर रखा जाता है, तो वह आज्ञाकारिता से भर जाता है। जैसा कि प्रभु यीशु ने कहा कि इसमें कोई हलचल नहीं थी, वह क्रूस पर अपनी मृत्यु तक आज्ञाकारी बने रहे। वह सूली पर अपनी मृत्यु तक सुगंध बन गया। फिर उन्होंने जीवन भर उन सभी यज्ञों को पूरा किया। जैसा कि हम सात त्योहारों को देखते हैं, उसने अपने पूरे जीवन में यह सब किया। उसने फसह नहीं मनाया, परन्तु फसह का बलिदान बन गया। अखमीरी रोटी देखने से अखमीरी रोटी निकली। अखमीरी रोटी के बिना एक मेमना, स्वर्ग की रोटी, जो स्वर्ग से उतरी। पहला फल यह था कि एक पूला लेकर मंदिर न ले जाएं अपने जीवन में पहली बार वह अपने पिता

के घर में महायाजक बना। तभी उसकी पूर्ति होती है। पिन्तेकुस्त वह है जिसे हम पुराने नियम में जीवित आत्मा, पिन्तेकुस्त के रूप में देखते हैं। पेंटेकोस्ट में एक मंदिर है। आत्मा, मंदिर और वचन इन तीन लोकों में हैं पिन्तेकुस्त में हमें पिन्तेकुस्त के पर्व के संबंध में अध्ययन करना चाहिए उसने यह सब पूरा किया और वह पहले मंदिर बना। यूहन्ना के दूसरे अध्याय के उन्नीसवें पद में प्रभु कहते हैं **कि इस मन्दिर को ढा दो, और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा।** वह उस मंदिर की बात कर रहा है जो उसका शरीर है। जैसा कि हमने कल पढ़ा, यीशु मसीह, जो मनुष्य का पुत्र बना, मनुष्य के पुत्र के रूप में जीवित रहा और पवित्रता की आत्मा में परमेश्वर का पुत्र बन गया । एक अर्थ में, यीशु, मनुष्य का पहलौठा पुत्र, पवित्रता की आत्मा में परमेश्वर का पुत्र बना। मुझे पता है कि इसे समझना थोड़ा मुश्किल है। लेकिन मैं इसे वहीं छोड़ रहा हूं। वह यीशु इक्लौता बेटा था ,लेकिन वह नयी सृस्टी कि पहिलौठा जेठा था।वह पहलौठा पवित्र आत्मा के संबंध में परमेश्वर का पुत्र परमेश्वर का पहलौठा पुत्र, हो गया या परमेश्वर का एकलौता पुत्र, परमेश्वर का पहिलौठा पुत्र, हमें पवित्रता की आत्मा का एक उदाहरण दिखाता है। हमारा तरीका वैसा ही है जब वह मनुष्य के पुत्र के रूप में आता है और एक जीवन को पूरा करता है और नई सृष्टि में आत्मा की पूर्ण आज्ञाकारिता में परमेश्वर का पुत्र बन जाता है। हमें दिखा रहा है। हम भी उस मार्ग पर चलें और पवित्र आत्मा के संबंध में पवित्र आत्मा की आज्ञाकारिता में परमेश्वर के पुत्र बनें। आठवां अध्याय परमेश्वर का पुत्र कहता है। मत्ती का सुसमाचार अध्याय 3 पद पन्द्रह में **यीशु ने उस को यह उत्तर दिया, कि अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है, तब उस ने उस की बात मान ली।** जिसे अब हम पांचवें अध्याय में 'पूर्ण होना' मानते हैं। मत्ती का सुसमाचार है, अध्याय पाँच, पद सत्रह **यह न समझो, कि मैं व्यवस्था था भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं।** इससे निजात पाने के लिए अब कई लोग सार्वजनिक रूप से कह रहे हैं। यीशु मसीह वह हटाने के लिए नहीं, बल्कि पूरा करने के लिए आया है। क्या उसने किया? अपने जीवन के माध्यम से, पूर्ण आज्ञाकारिता के माध्यम से, क्रूस के माध्यम से, स्वर्गारोहण के माध्यम से, वह पहले फल बन गए - पहला फल कलीसिया के लिए है - उस कलीसिया में वह आज हमारे लिये पिता के दाहिने विराजमान है। पहला परिणाम परमेश्वर के लिए है। प्रभु यीशु मसीह है पहला फल। यह पहला फल वे हैं जो कभी पाप से मरे थे और अब आज परमेश्वर के लिए जी रहे हैं। मत्ती के सुसमाचार का पाँचवाँ अध्याय अठारहवाँ पद है **लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं, क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।** ये प्रभु यीशु के वचन हैं। मत्ती का सुसमाचार, अध्याय 5, पद 19 **इसलिये जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही**

**लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उन का पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा।** तो यह यहाँ है। आइए अब हम रोमियो की पत्रि के आठवें अध्याय की ओर मुड़ें वहाँ हम चौथा पद पढ़ते हैं **इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।** इस प्रकार हम न्याय की पूर्ति को तीन स्थानों पर देखते हैं। यीशु कहते हैं कि मैं व्यवस्था को हटाने नहीं आया हूँ मैं prophets को हटाने नहीं, बल्कि उन्हें पूरा करने आया था। यहाँ हम रोमियों की पत्री के आठवें अध्याय के चौथे पद में पढ़ते हैं यह बहुत महत्वपूर्ण है कि शरीर को नहीं बल्कि आत्मा को है आज्ञा मानने वालों में व्यवस्था की धार्मिकता पूरी हो। तब फसह का पर्व हम में अवश्य पूरा होना चाहिए। हमें फसह का बलिदान चढ़ाने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन हमें फसह की क्षमा, नया नियम प्राप्त होता है, जैसा कि इब्रानियों के दसवें अध्याय के उन्नीसवें पद में कहा गया है **सो हे भाइयो, जब कि हमें यीशु के लोहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है।** खून में बहुत सी चीजें होती हैं। यह सब हमारे जीवन में पूरा होना चाहिए। पहला पतरस का पहला अध्याय है सोलहवें पद में कहते हैं **क्योंकि लिखा है, कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं।** तब हमारे जीवन में खमीर की अनुपास्थिति हमारा जीवन में पूरा होना चाइये । वह कैसे? आत्मा की आज्ञाकारिता के जीवन में। यीशु पहला फल है और हम एक तरह से पहले फल हैं। एक तरीके से इसी प्रकार का। पिन्तेकुस्त को पूरा किया जाना चाहिए और पवित्र आत्मा से बपतिस्मा लिया जाना चाहिए। आत्मा की परिपूर्णता, आत्मा की आज्ञाकारिता, आत्मा की शक्ति, अभिषेक सभी को आत्मा में प्राप्त होना चाहिए। इसकी शुरुआत की बपतिस्मा से होती है। आत्मा की परिपूर्णता वहाँ है जहाँ आत्मा रहती है, आत्मा के अनुसार चलती है,शैतान और उसके गिरोह को हरा देता है, संसार शरीर की वासना, आंखों की वासना और जीवन के अभिमान से दूर हो जाता है प्रभु ने इन सब पर विजय प्राप्त की है और हमें भी इस पर विजय प्राप्त करनी है। इस प्रकार हमें आत्मा की शक्ति और आत्मा के अभिषेक के साथ प्रभु की सेवा करनी चाहिए। तो उस जीवन में, आत्मा का अनुसरण करने वाले जीवन में, हमारे आध्यात्मिक ग्रह का निर्माण होता है। यूहन्ना अध्याय 2 उन्नीसवां पद **यीशु ने उन को उत्तर दिया; कि इस मन्दिर को ढा दो, और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा।** यह मंदिर है जो उसका शरीर है। मंदिर - जीवित पत्थर। ( पहला पतरस 2:4,5 ) **उसके पास आकर, जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया, परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ, और बहुमूल्य जीवता पत्थर है।**वह पत्थर जिसे स्वर्ग में परमेश्वर ने कीमती माना। जब हम उस जीवित पत्थर के पास आए पहला पतरस दूसरा अध्याय पाँचवाँ पद **तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनते जाते हो, जिस से याजकों का पवित्र समाज बन कर, ऐसे**

**आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हों।** इफिसियों अध्याय 2, पद 20 **और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नेव पर जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है, बनाए गए हो।** इफिसियों अध्याय 2 पद 22 में **जिस में तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान होने के लिये एक साथ बनाए जाते हो॥** जिस भवन में चर्च बनाया जा रहा है। वह अगला मानक है। मैंने इसके दूसरे स्तर का जिक्र नहीं किया। यह परिवार का मंदिर है। उस व्यक्ति के जीवन का मंदिर जो वहां हमारा शरीर है। अगला मंदिर परिवार है। परिवार में पत्नी और पति, पति, पत्नी, पुरोहित, पुरोहित का सहारा और बच्चे एक ही आकार के हो जाते हैं, एक परिवार जिसमें परमेश्वर वास करता है जब ऐसे परिवार एक साथ आते हैं जो परमेश्वर के साथ संगति रखता है, पिता और पुत्र के साथ एकता में परिवार चर्च का आध्यात्मिक ग्रह है जब यह सब एक साथ आता है एक वह है जो पहला तीमुथियुस के तीसरे अध्याय के पंद्रहवें पद में है **कि यदि मेरे आने में देर हो तो तू जान ले, कि परमेश्वर का घर, जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है, और जो सत्य का खंभा, और नेव है; उस में कैसा बर्ताव करना चाहिए।** आत्मिका ग्रह एक ऐसा विषय है जिसका हमें अध्ययन करना है और व्यवहार में लाना है। यही वह है जो हममें पिन्तेकुस्त की पूर्ति करता है। फिर यह बपतिस्मा लेने और दो अन्य भाषाएँ बोलने के बारे में नहीं है, यह सब से ऊपर है। इसे पूर्णता में आना चाहिए। यह आत्मा के नेतृत्व वाला जीवन है। फिर तुरहियों का पर्व, प्रायश्चित और झोपड़ियों का पर्व। pentecostal system प्रणाली सिखाती है कि आने वाले समय में इसे अवश्य ही होना चाहिए। लेकिन अब हमें इसे आध्यात्मिक रूप से हासिल करना होगा। परमेश्वर का वचन हमारे भीतर गूंजना चाहिए। इसे तुरही की ध्वनि के रूप में सुना जाना चाहिए। क्या पाप का प्रायश्चित। यह पहले अध्याय में पाप के प्रायश्चित के बाद है कि हमारे लिए पिता के दाहिने हाथ बैठने के लिए एक महायाजक पूर्वनियत है। देह के परदे को फाड़ डाला और पवित्रस्थान का द्वार खोल दिया। वहाँ खून से प्रवेश करो और साम्य रखो। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की सहायता के साथ संगति। इसलिए प्रेरित पहले यूहन्ना के पहले अध्याय, तीसरे पद में साहसपूर्वक कहते हैं **जो कुछ हम ने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिये कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है।** जब हम चौदह या पन्द्रह अध्यायों को पढ़ते हैं तो वह सुंदर है। चौदहवें अध्याय के मध्य में पिता और पुत्र के साथ उस संगति का वर्णन किया गया है। पवित्र आत्मा, सत्य का आत्मा, सदा तुम्हारे साथ रहने के लिए। पंद्रहवें अध्याय में पूर्णता। यह एक अच्छा समूह है। सही? तुम मुझ में रहो और मैं तुम में। रहने वाला और फल देने वाला। प्यार में जिया एक जीवन - प्रेम आज्ञाओं का पालन करता है -और फिर प्रभु के मित्र होने का जीवन, फेलोशिप में ही वे दोस्त आते हैं। आप अब नौकर नहीं बल्कि

दोस्त हैं। यूहन्ना पंद्रहवां अध्याय सोलहवें पद में कहता है **तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ; और तुम्हारा फल बना रहे,**लेकिन उससे ऊपर बारह या है। तब सब कुछ जो पुराने कानून की छाया में है, हमारे जीवन में सच हो जाएगा। कैसे? रोमियो की पत्रि चौथे पद में आठवां अध्याय **इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।** पूरा किया जाएगा। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण पद है।परन्तु यीशु मसीह का व्यवस्था, Prophets, या स्तोत्रों को लेने नहीं, पर उसे पूरा करने आया है। तब हमें इसके भीतर की सच्चाई को जानना चाहिए। इसलिए हमें पुराने नियम का अध्ययन करना चाहिए। क्यों पूरा किया जाना सिर्फ ज्ञान के लिए नहीं, इसे पूरा करने के लिए। यहोवा जो परमेश्वर है, हमारी सहायता करे। तब प्रेरित हमें सिखाता है कि शरीर और आत्मा की तुलना इसी से की जाती है। याद रखें कि हमारे पास जो पहली अवस्था है वह है देह की अवस्था। शरीर पहले आता है, फिर आत्मा। यह एक दस्तावेज है। कामुक आदमी पहले पैदा होता है लेकिन आध्यात्मिक आदमी बाद में पैदा होता है। पद 1 कुरिन्थियों 15:46-49 पढ़ें। **परन्तु पहिले आत्मिक न था, पर स्वाभाविक था, इस के बाद आत्मिक हुआ। प्रथम मनुष्य धरती से अर्थात मिट्टी का था; दूसरा मनुष्य स्वर्गीय है। जैसा वह मिट्टी का था वैसे ही और मिट्टी के हैं; और जैसा वह स्वर्गीय है, वैसे ही और भी स्वर्गीय हैं।** तब हमें इन दो आदमियों के बारे में अच्छी समझ होनी चाहिए। तब हम में शरीर पहले पैदा होता है और फिर आत्मा। देहधारी मनुष्य में एक प्रकृति होती है, यह एक व्यवस्था है। वह चरित्र सामने आता है। या उसके भीतर कोई जीवन है, वह जीवन पाप का जीवन है। यह एक ऐसा जीवन है जो मृत्यु की ओर ले जाता है। यहां तक कि अगर इसमें से अच्छी चीजें निकलती हैं, तो यह सभी *duplicate* हैं, जैसा कि मुझे याद है। इससे परमेश्वर प्रसन्न नहीं होंगे। यशायाह चौंसठवां अध्याय छठे पद में कहता है **हम तो सब के सब अशुद्ध मनुष्य के से हैं, और हमारे धर्म के काम सब के सब मैले चिथड़ों के समान हैं। हम सब के सब पत्ते की नाईं मुर्झा जाते हैं, और हमारे अधर्म के कामों ने हमें वायु की नाईं उड़ा दिया है।** परमेश्वर के सामने एक दागदार कपड़ा। इसलिए जब हम रोमियों के आठवें अध्याय में पाँचवाँ पद पढ़ते हैं **क्योंकि शरीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।** विचार, मन। हमने आदिम मन, व्यर्थ मन, सीमित मन के बारे में सोचा, यह देहधारी मनुष्य का मन है। उस मन को बदलने की जरूरत है। यह हमें उस पर लाता है। आठवें अध्याय के बाद बारहवें अध्याय में हम मन का परिवर्तन देखते हैं। कि यह आठवां अध्याय हमारे जीवन में एक वास्तविकता बन जाए। तभी बारहवें अध्याय के पहले और दूसरे वाक्य हमारे जीवन में वास्तविकता बनेंगे। फिर जो मनुष्य देह से उत्पन्न हुआ है, वह देह के स्वरूप में जन्म लेता है। ऐसा नहीं है

कि स्कूल मे जाकर , मैंने कुछ नहीं सीखा। इसमें द्वेष, कलह, ईर्ष्या, भौतिकवाद, संसार का प्रेम, ये सब बिना किसी भेदभाव
और सभी शर्तों के एक साथ स्वीकार किए जाने के सौदे के रूप में सामने आए हैं।
यह बढ़ता है और बहुत आसानी से उस दुनिया से जुड़ जाता है जो वह बन गई है।
जब कोई बच्चा बड़ा हो रहा होता है और उसे बहुत सी चीजें सिखाने की जरूरत होती है, अगर हम एक खिलौना खरीदते हैं और हमारे दो बच्चे हैं, तो हमें उन्हें यह सिखाने की ज़रूरत नहीं है कि इसका इस्तेमाल कैसे करना है यह वहाँ है, आप देखते हैं? तब जो लोग शारीरिक हैं वे केवल शारीरिक के बारे में सोच सकते हैं, शरीर का सोचता है। यदि आप आध्यात्मिक क्षेत्र में सोचते हैं, तो भी आप देह के संदर्भ में सोच रहे हैं। यदि वे कुछ शब्द सिखाने बैठें, तो भी वे शरीर के अनुसार सोचेंगे। मैं यह सब इस सोच के साथ लिख रहा हूं कि मैं यह नोट लिख कर प्रचार करने के लिए अगले स्थान पर जाऊं। जीवन वह नहीं है जो होना चाहिए। कुछ लोग पूछते हैं कि क्या कोई अच्छी बात है क्यों? बात समझ में आने पर वे इस पर बात करेंगे। फिर इसे अगले *Programme* में कहा जाता है। **परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।** तब हमें आत्म-प्रकृति प्राप्त करनी होगी। यह स्वाभाविक रूप से हमारे पास नहीं आता है। हमें आत्म-अनुशासन प्राप्त करना होगा। परमेश्वर ने इसे इस तरह रखा है। मैं अक्सर शुरुआती दिनों में अपने दिमाग में वापस आ गया हूं क्या होगा यदि हमने आत्मा में बपतिस्मा लिया और तुरंत परमेश्वर के सिद्ध मनुष्य बन गए? लेकिन ऐसा नहीं है कि परमेश्वर ने इसे कैसे बनाया। क्योंकि एक बच्चा एक पूर्ण विकसित इंसान के रूप में पैदा नहीं होता बल्कि एक बच्चा एक बच्चे के रूप में पैदा होता है। और उस बच्चे को एक एक करके सीखना चाहिए। बहुत सी बातें उस बच्चे को ही सिखाई जा सकती हैं। और इसलिए यह बढ़ता है। उसे केवल वही दूध दिया जा सकता है जिसकी उसे आवश्यकता है। इसके माता-पिता को इसकी वृद्धि के अनुसार वे परिवर्तन प्रदान करने होते हैं। जैसा कि कहा गया है, जब आत्मिक संतान एक बच्चे के रूप में पैदा होती है, तो वह विकास के माध्यम से आत्मा के चरित्र को प्राप्त करती है। हम यह नहीं जानते कि जब बच्चे बड़े होते हैं, तो उनमें स्वाभाविक रूप से कुछ वसा होती है। लेकिन जैसे-जैसे माता-पिता बड़े होंगे, वैसे-वैसे बच्चे भी होंगे। वे इसे जल्दी से नोटिस करते हैं, उन्हें बस देखना और देखना है। तब उन्हें केवल हमें चलते, बैठे और खड़े होते देखने की जरूरत है, और यह जल्दी से उनमें समा जाएगा। यही कारण है कि संतान अक्सर माता-पिता की विशेषताओं को प्राप्त करते हैं। लेकिन अगर हम स्व-प्रकृति में आना चाहते हैं, तो हमें उसके लिए परमेश्वर की उपस्थिति में बैठना होगा। हमें अपने पिता के साथ समय बिताना चाहिए, हमें अपने उद्धारकर्ता के साथ बैठना चाहिए । उस उपस्थिति के द्वारा ही हमें अनेक दैवी गुण प्राप्त होते हैं। निर्गमन की पुस्तक में निवास स्थान परमेश्वर की

उपस्थिति में शुद्ध किया जाता है, इसके अंदर मौजूद उपकरणों को भी शुद्ध किया जाता है। पुरोहित , उपस्थिति। तो ऐसे कई क्षेत्र हैं जो हमें पवित्रीकरण की ओर ले जा सकते हैं। एक महत्वपूर्ण क्षेत्र परमेश्वर की उपस्थिति में समय बिता रहा है।परमेश्वर की उपस्थिति तब होगी जब हम उन वचनों पर ध्यान कर रहे होंगे जो हम में बिना कुछ किए डाले गए हैं। इसी तरह, एक अच्छे आध्यात्मिक समुदाय में, एक निरंतर आध्यात्मिक समुदाय में, एक धन्य चर्च, एक सच्चा चर्च जो सत्य की घोषणा करता है, सच्चे आध्यात्मिक समुदाय की वास्तविकता है, एक दूसरे के लिए प्यार। अगर कोई बच्चा ऐसे चर्च में बड़ा होता है, तो आध्यात्मिक चीजें जल्द ही उस बच्चे के लिए आंतरिक हो जाएंगी। मैं स्व-संतान की बात कर रहा हूं। जितने पुनर्जन्म और बपतिस्मा यहाँ आते हैं, यह वातावरण बहुत अशुद्ध है। वह जो कुछ भी साँस लेता है, खाता है और देखता है वह सब अशुद्ध है। जीवन का मार्ग अशुद्ध होगा, बोलने का तरीका परमेश्वर के वचन के अनुसार नहीं होगा, फिर देखना, सुनना, व्यवहार करना, यदि इन सभी में अशुद्धता है, तो बच्चे का किसी भी तरह से बढ़ना संभव नहीं है। पवित्रता के दायरे के बजाय, बच्चा अपवित्रता से अपवित्रता में चला जाएगा। हम जिस वातावरण में बढ़ते हैं, वह बहुत महत्वपूर्ण है। और निश्चित रूप से हमें यह आत्म-स्वभाव परमेश्वर के वचन के प्रकाशन में मिलता है। धार्मिकता का वचन। तब हमारे पास धार्मिकता का चरित्र होना चाहिए। और प्रार्थना जीवन ईश्वर की उपस्थिति है। तब हमें आध्यात्मिक रूप से विकसित होने के लिए यह सब समझना चाहिए और उसके लिए खुद को प्रत्येक स्थिति में रखना चाहिए। इसके विकसित होने के लिए, हमें इसकी आज्ञाकारिता में रहना चाहिए, ताकि हम इस स्व-प्रकृति को स्पष्ट रूप से प्राप्त कर सकें। तब जो लोग शारीरिक हैं वे कभी भी आत्मा के द्वारा सोचने में सक्षम नहीं होंगे।आत्मा के स्वरूप में आए बिना आत्मा में क्या है, इसके बारे में सोचना संभव नहीं है।तब हमें इसकी आवश्यकता होती है, यह कोई ऐसी चीज नहीं है जो हम स्वयं प्राप्त करते हैं। कुछ उपलब्ध होंगे। जैसा कि मैंने पहले कहा, अगर हम ऐसे क्षेत्र में जा रहे हैं जहां एक मॉडल है, तो हम इसे थोड़ा सा प्राप्त करेंगे। परन्तु उन्हें इसे स्वयं प्राप्त करना चाहिए: यह परमेश्वर के साथ संगति में, परमेश्वर के वचन में, आत्मा की आज्ञाकारिता में प्राप्त किया जाना चाहिए। इसलिए यदि आप आत्मा के अनुसार चलना चाहते हैं, तो आपको एक मन्नत लेनी होगी। जाओ और परमेश्वर के सामने बैठो और एक मन्नत लो। या परमेश्वर से कहो, मुझे आत्मा में रहना चाहिए। इसके लिए हमें हर दिन परमेश्वर के सामने रोना चाहिए। प्रभु मैं आत्मा में रहना चाहता हूँ। फिर बिना सोचे-समझे हम बाइबल कम पढ़ते हैं और सभाओं और समूहों में जाते हैं जो लोग आध्यात्मिक रूप से जीते हैं और इस तरह की चेतना के बिना कभी भी आध्यात्मिक रूप से विकसित नहीं हो पाएंगे। अच्छी वाणी में अन्य भाषा बोल सकता है, अच्छी बातें कह सकता है। इसका प्रचार किया जा सकता है, लेकिन आध्यात्मिक विकास

इन सबसे ऊपर है। आत्मिक विकास  इन सबसे ऊपर है। यह विचार है, विचार का क्षेत्र है। आइए इसे स्वयं आजमाएं। हम सुबह से यही सोचते हैं। जब हम सुबह उठते हैं और अपने दाँत ब्रश करते हैं - और उसके बाद - अपने दाँत ब्रश करते समय हम क्या सोच रहे होते हैं? तो चलिए इसे आजमाते हैं। मैं इसे सालों पहले आजमा रहा था। और जब हम उस विचार को अपने ध्यान में परमेश्वर  के पास लाते हैं, तो एक समय के बाद हम केवल परमेश्वर  के बारे में सोच रहे होते हैं। मैं सच कह रहा हूं, बिल्कुल सच। जब कोई दूसरा विचार आता है तो हम जानते हैं कि यह एक अवांछित विचार है और हम तुरंत इसे फटकार लगाते हैं। इफिसियों का पाँचवाँ अध्याय ग्यारहवें पद में कहता है **और अन्धकार के निष्फल कामों में सहभागी न हो, वरन उन पर उलाहना दो।** इसे हम पर हावी न होने दें। कुछ लोग हमेशा सोचते हैं क्या  क्या नहीं चाहते हैं।वही  हमारे भीतर देह का वह क्षेत्र जो सोचता है वह सब विपरीत है। ऐसा नहीं है कि हम इसमें रहते हैं और कुछ के लिए यह एक तरह का मनोरंजन है। वे विरोधाभासी सोच  का मनोरंजन करते हैं। जिससे खतरा पैदा हो जाता है। आसन्न एक कारात्मक व्यक्ति है जिसके बारे में सोचना है। वे जो कुछ भी देखते हैं, वही देखते हैं जो वे नहीं चाहते। यही मानवीय स्थिति है। मैं एक उदाहरण देता था यदि मैं एक *White* पत्र पर एक काली बिंदी लगाता हूं और आपको दिखाता हूं कि आप क्या देखेंगे? *White* पत्र या ब्लैक स्पॉट देखें? वह स्थान दिखाई देता है। मैं आपसे पूछ रहा हूँ। मैंने इसे जमाया है और इसमें एक काला बिंदु है? बाकी सब सफेद है। हमें कुछ भी सफेद नहीं दिखता है। हम वल काला धब्बा देखते हैं।यह हमारे लिए एक र्खतापूर्ण उदाहरण की तरह लग सकता है, लेकिन हम हैं।जब हम किसी को देखते हैं, तो सबसे पहले हम देखते हैं कि उसमें  च्छाई नहीं है, लेकिन अगर ऐसा कुछ है जिसे हम नहीं चाहते हैं, तो हमारे दिमाग में तुरंत यही बात आती है। यह ठीक है, हमारे पास 'हालांकि' शब्द है। तो सोच एक बड़ा क्षेत्र है जिसे हमें रखना है। जब हम स्व-पुरुष बन जाते हैं, तो हम इस स्व-प्रकृति में आ जाते हैं जैसा कि हम फिलिप्पियों अध्याय 4 पद 8 पढ़ते हैं **निदान, हे भाइयों, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, निदान, जो जो सदगुण और प्रशंसा की बातें हैं, उन्हीं पर ध्यान लगाया करो।** हम सोचने लगे हैं।  इसकी शुरुआत शांति के बारे में सोचने से होती है। फिर एक बार खुद को परखें। मैं बीच में क्या सोच रहा हूँ? मैं पिछले एक घंटे से क्या सोच रहा था? अगर हमारे पास मशीन होती तो बहुत अच्छा होता। लेकिन हमारे पास ऐसी कोई मशीन नहीं है। हमें बस इतना करना है कि हम खुद को देखें। अर्थात् शरीर का सोच ही मृत्यु है। यदि हम शरीर पर मन लगा रहे हैं, तो यह हमें मृत्यु की ओर ले जाता है। परन्तु रोमियों अध्याय 8 छठे और सातवें पद में कहता है **शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है। क्योंकि शरीर**

**पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है।** वहां आपको कानून नाम का एक शब्द दिखाई देता है। परमेश्वर का वचन एक परीक्षा का मैदान है। क्या मैं वचन को पढ़ना चाहता हूँ जब हम पहली बार इसे शुरू करते हैं? क्या आपको वचन पढ़ते समय नींद आती है? क्या आपको वचन सुनते समय नींद आती है? अगर कोई यहां बात कर रहा है तो नींद। यहां और कोई कार्यक्रम है तो कुछ नहीं हम सब कुछ भूल गए। हम उसमें डूबे हुए हैं। हम अगले तीन से चार घंटे नहीं जानते। मुंह नहीं खुलेगा। इसलिए जब मैं यह कहता हूं तो हम उस स्तर तक नहीं हैं। उसी तरह, वचन हमारे भीतर उस हद तक जीवन नहीं बन गया है। वह माप जिसमें शब्द वास करता है। भजन संगीता पहला अध्याय दूसरे पद में कहता है **परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है।** जो दिन-रात ध्यान करता है। हम वहां कहीं नहीं हैं। लेकिन हमें वहीं जाना चाहिए । उस मानक पर आना चाहिए। व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है, "तू अपने मुख से न हटेगा।" शब्द कहाँ है? हमारे मुंह में और हमारे दिलों में। शब्द भी मुंह में होना चाहिए। क्योंकि अगर हम इसे वापस बुलाना चाहते हैं, अगर हम इसे खुद से कहना चाहते हैं, तो शब्द हमारी जुबान पर होना चाहिए। कुछ लोगों को वचन  अच्छा मजा आएगा है, यह एक आकर्षण है, और इसमें कुछ शब्द उनके लिए एक आकर्षण भी हैं। मैंने बहुतों को वचन सिखाया है जो उस तरह से हैं। वे घंटों बैठे रहते हैं। पांच-छह घंटे बाद भी नहीं उठते और चले जाते हैं। यह उनके लिए एक आकर्षण है। इस  हावत में एक स्वाद है कि यह जीवन में नहीं आता है। खासकर अगर इस शब्द को समझाया और सिखाया जाता है, तो उन्हें कहीं न कहीं ज्ञान होता है। वे इसका खूब लुत्फ उठा रहे हैं। यहाँ रोमियो की पत्रि सातवें अध्याय में बाईस और तेईस वाक्य  में कहते हैं **क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूं। परन्तु मुझे अपने अंगो में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है, और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है।** इसलिए जब हम पढ़ते हैं तो यह एक ऐसा जीवन है जो पाप को दूर नहीं कर सकता। लेकिन लगता है कि कानून को इसमें मज़ा आ रहा है. यह वचन का पालन करने के योग्य मानक नहीं है, अवश्य ही आना चाहिए। यह वहाँ है कि हम महसूस करते हैं कि हम आत्मा की आज्ञाकारिता में जी रहे हैं। आत्मा का कार्य हमारे भीतर है। यह कहता है कि शब्द मन से सीखा जाता है। और कई बुद्धि से खुश हैं। उसमें आत्मा का कार्य नहीं है। हम जानते हैं कि आत्मा का कार्य हम में है या नहीं, परमेश्वर का आत्मा हमें वचन को जीवन की आत्मा के दस्तावेज के रूप में देता है या नहीं, उस जीवन में जो वचन के अनुसार जीता है।  वे साफ तौर पर कहेंगे 'मैं ऐसा नहीं कर सकता'। हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जहां सब कुछ बसा हुआ है। जब चर्च में समझौता होगा, तो सभी उसके

साथ जाएंगे। क्योंकि उन्होंने इसका अनुभव नहीं किया है। परन्तु उनमें से एक जो सचमुच वचन में लिखा हुआ है, कहेगा, 'नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता, यह मेरी आंतरिक आज्ञा के विरुद्ध है। मैं उस पर खरा नहीं उतर सकता'। हम जानते हैं कि चर्च में चाहे कितनी भी हरकतें क्यों न हों, हम सभी आम तौर पर उसके साथ जाते हैं। इसमें कोई कुछ नहीं कहेगा। कुछ इसका आनंद लेते हैं। इसमें गीत है और अब नृत्य है। कुछ कहेंगे ठीक है यहाँ अच्छे गाने हैं अब अच्छे नृत्य हैं। यह सभी अमेरिकी देशों में सालों पहले शुरू हुआ था। सभी प्रकार के नृत्य हैं।लोग इसका लुत्फ उठा रहे हैं। तो उनमें कौन-सी आत्मा काम कर रही है? आज मौजूदा चर्चों को बनाए रखना तभी संभव है जब इस तरह के काम किए जाएं। अगर हम अब अपोस्टोलिक चर्च के सिद्धांत पर आ रहे हैं, जब वे एक साथ इकट्ठे हुए थे परामर्श, संगति, रोटी तोड़ना और प्रार्थना प्रेरितिक व्यवस्था है। और इसके बीच में भजन संगीता । इफिसियों का पाँचवाँ अध्याय अठारहवें और उन्नीसवें वाक्य में कहता है **और दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इस से लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ। और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के साम्हने गाते और कीर्तन करते रहो।**

संसार से परिपूर्ण होने से नहीं। आत्मा से परिपूर्ण होना। हम ठीक इसके विपरीत देख रहे हैं। यह नहीं कहा जा सकता है कि चर्च, जो दुनिया से यहां आता है, वहां से सब कुछ सीखता है और यहां भरता है और यहां लाता है, यह सब दिखाता है। क्या मैं सही हूँ? उतना ही पतित है। लेकिन फिर बैठे लोग मजे ले रहे हैं. वे मस्ती कर रहे हैं। बछड़ा बनाकर उसके आगे जो गीत और नृत्य होता है, उसमें कोई भेद नहीं है। इस बीच, कुछ लोग जो वचन से कांपते हैं, उन्हें उठना चाहिए। वहां कोई समझौता नहीं है। हमारे प्रभु ने मत्ती द्वारा लिखित सुसमाचार के 18वें अध्याय के 20वें पद में कहा है **क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं वहां मैं उन के बीच में होता हूं॥** फिर दो या तीन लोग ही काफी हैं। परमेश्वर की सच्ची कलीसिया को वचन की आवश्यकता है और साथ ही कुछ लोग जो उस वचन से कांपते हैं, सिद्ध आध्यात्मिक लोग हैं जो समझौता नहीं करते हैं। वे हाथ उठाते हैं और कहते हैं कि मुझमें आत्म-स्वभाव इसलिए नहीं है कि मैंने कुछ किया है, बल्कि इसलिए कि आत्मा मुझमें निवास करती है। यह कुछ बाहरी आत्म-धार्मिकता या आत्म-धार्मिकता के कार्य नहीं हैं जो मैं प्रदर्शित करता हूं, लेकिन आध्यात्मिक प्रकृति जो मेरे माध्यम से आती है क्योंकि आत्मा मुझ में निवास करती है। इस प्रकार, यदि आत्मा निवास करती है, तो वे शारीरिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक हैं। इसलिए यदि हम आत्मा के स्वरूप में आना चाहते हैं, तो परमेश्वर की आत्मा को हम में वास करना चाहिए। इस तरह हमें परमेश्वर के सामने बैठना चाहिए, शब्द को पढ़ना चाहिए, उस पर ध्यान करना चाहिए, उसे तब तक आत्मसात करना चाहिए, जब तक कि वह दो दिन नहीं, एक दिन में हमारे

भीतर हो जाए। गहरी प्यास होनी चाहिए। रोमियों अध्याय 8 में लिखित जीवन जीने की प्यास होनी चाहिए। आइए अब अगले दो वर्षों तक इस पर ध्यान करें। क्यों? यह जीवन पाना है। जब आप वचन को सुन रहे है , तो आप सब अपना मन बना लें कि मैं उस जीवन में आना चाहता हूँ जिसके बारे में रोमियों 8 अध्याय कहता है। दूसरे शब्दों में, यह भौतिक प्रकृति के बारे में नहीं है जो यहां लिखा गया है, यह आध्यात्मिक प्रकृति है। मुझे आत्मा के अनुसार चलना है, और व्यवस्था की सारी धार्मिकता मुझ में पूरी होनी चाहिए। कैसे जैसा यीशु ने किया। निम्नलिखित वाक्य पढ़िए। फिर बारहवाँ पद पढ़ें **सो हे भाइयो, हम शरीर के कर्जदार नहीं, ताकि शरीर के अनुसार दिन काटें।** हमें याद रखना चाहिए कि हम कर्जदार हैं। हम परमेश्वर के कर्जदार हैं। हमारे प्रभु यीशु कर्जदार हैं। क्योंकि हमें बड़ी कीमत देकर छुड़ाया गया था। इसलिए हम शरीर के कर्जदार नहीं हैं, कि हम शरीर के अनुसार जीते हैं, हम शरीर के कर्जदार नहीं हैं। नीचे पढ़ते समय **क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे,** यह एक भयानक भूल है, बड़ी मूर्खता है। यह एक ऐसा मामला है जो हमारे दैनिक जीवन को प्रभावित करता है। यह इतना गंभीर है। इसे ज़्यादा मत सोचो। **क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रीयाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे।** तब परमेश्वर का वचन हमें परमेश्वर की आत्मा की आज्ञाकारिता में जीने वाले जीवन में शरीर के कर्मों को मारने के लिए कहता है। इसलिए जब हम इस स्तर पर आते हैं तो हमें कुछ छंदों को पढ़ते समय डरने की जरूरत नहीं है, नहीं तो सवाल करने की जरूरत नहीं है। बहुत से लोग सवाल करते हैं। ऐसे ही मर जाए तो क्या? क्या यह विधिवाद नहीं है? ऐसे कई तर्क हैं। पढ़ें पहला कुरिन्थियों अध्याय नौ, पद सत्ताईस। **परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता, और वश में लाता हूं; ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके, मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं॥** यह हमारे लिए बहुत कठिन वाक्य है मेरे शरीर पर अत्याचार और दासता "। क्या यह युद्ध-विरोधी सिद्धांत है? क्या कुछ लोग अपने शरीर को चोट पहुँचा रहे हैं? इसका मतलब यह नहीं है यह उस हद तक नहीं है जब मैं कहता हूं, मेरे शरीर को दंड दो, कि मैं एक बुरा व्यक्ति न बन जाऊं। यह कोई ऐसी घटना नहीं है जिसका इरादा हम तब करते हैं जब हम आत्मा की आज्ञाकारिता में होते हैं और आत्मा हमें कई चीजों से नियंत्रित करेगा।वही हम में आत्मा करता है। याद रखें कि आत्मा काम करती है, हम नहीं। वह आत्मा जो हममें निवास करती है। आत्मा हमें सूचित करेगी, आत्मा हमें प्रेरित करेगी, आत्मा हमें शक्ति देगी, आत्मा में शरीर के कार्यों को नष्ट करने की शक्ति है। तब आत्मा के उस कार्य के द्वारा हम धार्मिकता के दास बन जाते हैं। यहाँ न्याय का दास लिखा है। हम न्याय के गुलाम हैं। जैसा कि कुलुस्सियों में है, तीसरा अध्याय, पाँचवाँ पद **इसलिये अपने उन अंगो को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो**

**मूर्ति पूजा के बराबर है।** तब शरीर में रहने वाले के लिए यह असंभव है। वह पूछेगा कि यह क्या है? अपने सांसारिक सदस्यों को मार डालो। परन्तु फिर पवित्र आत्मा हमें किस सन्दर्भ में निर्देश देता है? कुलुस्सियों के अध्याय 2 में बपतिस्मा के बारे में बात की गई है। और फिर बीसवें पद में **जब कि तुम मसीह के साथ संसार की आदि शिक्षा की ओर से मर गए हो, तो फिर उन के समान जो संसार में जीवन बिताते हैं मनुष्यों की आज्ञाओं और शिक्षानुसार** कुलुस्सियों के तीसरे अध्याय के पहले पद में **सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है।** तब यह निर्देश हैं जो हमें उच्च आध्यात्मिक स्तर पर आने पर मिलते हैं जब आप कुलुस्सियों का तीसरा अध्याय तीसरा पद यहाँ पढ़ते हैं **क्योंकि तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है।** यह इतना उच्च आध्यात्मिक स्तर है। फिर कुलुस्सियों का तीसरा अध्याय पांचवें पद में कहता है **इसलिये अपने उन अंगो को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्ति पूजा के बराबर है।** इसके बारे में एक अर्थ में सोचा जा सकता है, लेकिन जब हम अपने सामने ऐसे अधिकारों को देखना शुरू करते हैं, तो हम देखते हैं कि यह आशा हमारे सामने आत्मा द्वारा रखी गई है, हम में से एक जो आत्मा के अधीन है। **इसलिये अपने उन अंगो को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्ति पूजा के बराबर है।**भीतर एक विशेष शक्ति है। हम जानते हैं कि इस दुनिया में कुछ पाने के लिए हम कितनी कीमत चुकाते हैं। क्या आप कीमत चुका रहे हैं? कीमत चुका रहा है। अगर आपको चौदह घंटे काम करना है, तो आप चौदह घंटे काम करते हैं। यदि यह सप्ताह में सात दिन है, तो वह भी करेगा। दुनिया में जो कुछ भी हमारे पास है उसे पाने के लिए हम एक बड़ी कीमत चुकाते हैं। हम शरीर पर अत्याचार कर उसे गुलाम बना रहे हैं। हम इसे दुनिया में देख सकते हैं। रुपये की मजबूती, घर की मजबूती, कार की मजबूती को देख सकते हैं। हमें इसका स्वाद आता है और इसलिए हम इसके लिए खुद को समर्पित कर देते हैं। अर्पण करना, यज्ञ करना। फिर जब हम देखना शुरू करते हैं कि स्वर्गीय क्या है, जब हम अपने स्वर्गीय स्थानों में मसीह के साथ निवास को देखना शुरू करते हैं, तब हम आत्मा में एक विशेष शक्ति का अनुभव करना शुरू करते हैं, पवित्र आत्मा की व्यापारिक शक्ति जो हमें व्याप्त करती है। इफिसियों अध्याय एक उन्नीसवीं वाक्य में कहता है **और उस की सामर्थ हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, उस की शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार।** जब आप स्वर्ग को देखना शुरू करते हैं, जैसे-जैसे हम आध्यात्मिक रूप से बढ़ते हैं - एक जीवन जिसमें आत्मा हम में वास करती है जब वह कहती है - उस जीवन में, वह सब कुछ जो हमें असंभव लगता है, संभव हो जाएगा। जब हम इस जमीनी स्तर से,

पार्थिव क्षेत्र से पढ़ते हैं, तो ऐसा कुछ नहीं होता है। यह उस शरीर  से है कि बाइबल का खंडन किया जाता है। ऍसे जीने की कोई जरूरत नहीं है,  वह अंदर से एक शारीरिक आदमी है। ऐसी बातें कहने वाला शैतान है।  जो परमेश्वर के इस वचन पर प्रश्नचिह्न लगाता है, उसके भीतर शैतान वास करता है। शैतान क़ा मदलप शारीर है । यह दूसरे व्यक्ति के रूप में ऐसे ही बैठा है। यह बहुत अच्छा लगेगा। एक अच्छी सफेद टाई पहनी हुई है। लेकिन उसमें शैतान बैठा है। अब आपको याद रखना चाहिए कि जो कोई भी वचन पर सवाल उठाता है उसके अंदर एक अच्छा शैतान है।जैसा कि एक छोटे लड़के ने कहा: 'शैतान मेरे पिता के अंदर है'।क्योंकि जब आध्यात्मिक विषय देखे गातो उनको गुसा आएगा । परमेश्वर की सन्तान, परमेश्वर के आत्मा के द्वारा जिया गया जीवन! स्वर्गीय है ना? हम आत्मा के प्रति आज्ञाकारिता के जीवन की कितनी लालसा करते हैं, हमें अपने पूरे जीवन को दांव पर लगाने की एक ज्वलंत इच्छा होनी चाहिए।मैं यह जीवन जीना चाहता हूं। यह स्वर्गीय जीवन है। अगर यह इच्छा नहीं है तो हम स्वर्ग में कैसे जा सकते हैं ? वहां जाने के बाद क्या करें? यह सब स्वर्गीय है। तभी जब आत्मा हमारे भीतर वास करती है, तभी हम इसे स्पष्ट कर सकते हैं। रोमियों अध्याय आठ में एक बात, पद तेरह **क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रीयाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे।** इसके बाद चौदहवाँ पद एक बहुत ही महत्वपूर्ण पद है।**इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।** यूहन्ना का सुसमाचार, अध्याय 1, पद 12 **परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।** वह अधिकार परमेश्वर की आत्मा के नेतृत्व में जीने का एक जीवन है ।  **परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।** अधिकार क्या है? हमारे भीतर वास करने वाले परमेश्वर के आत्मा से बड़ा अधिकार कहाँ है? हमें याद होगा कि अमेरिका के राष्ट्रपति या भारत के प्रधान मंत्री सबसे अधिक अधिकार किसका है ?  उनका अपना स्तर का अधिकार है। लेकिन अब परमेश्वर ने हमें इससे भी बड़ी ताकत दी है।पाप, संसार, शैतान और शरीर पर विजय पाने की शक्ति। दुनिया की कोई भी चीज इससे उबर नहीं सकती। तुम पाप पर विजय नहीं पा सकते, तुम संसार पर विजय नहीं पा सकते, तुम शरीर पर विजय नहीं पा सकते, तुम शैतान पर विजय नहीं पा सकते। परन्तु परमेश्वर की एक संतान जो परमेश्वर की आत्मा वास करती है और जो परमेश्वर की आत्मा के नेतृत्व में है, इन सभी क्षेत्रों पर विजय प्राप्त कर सकता है।  फिर परमेश्वर के आत्मा के नेतृत्व में जीवन की लालसा करो। प्रभु इसे मुझे दिखाओ। वह क्या है यह मानवीय रूप से कुछ भी नहीं सिखा सकता। उन्हें स्वयं उस दायरे में प्रवेश करना होगा। यह परमेश्वर के साथ आपकी संगति है। यह एक

प्रार्थना जीवन है, परमेश्वर के वचन की प्यास है, यह आत्मा के प्रति समर्पण है। इसलिए इसे अवश्य पढ़ें और ध्यान करें, और इसमें निहित सभी आध्यात्मिक विचार आपके भीतर हो जाएं और आपके भीतर आ जाएं। इस प्रकार हमारा हृदय वचन से भर जाता है। आपको हमारे हृदयों को वचन के सभी आध्यात्मिक सत्यों से भरना चाहिए । हमारी बुलाहट, हमारा चुनाव, हमारी रचना, वे सभी क्षेत्र जो मैं अभी सिखा रहा हूँ, पाप में पड़ने पर कैसी परीक्षाएँ आईं, यह सब हमारे भीतर होना चाहिए।हमें इसे ध्यान में रखना है, हमें इसे समझना है, और फिर हमें इसे अपने जीवन में फिट करना है।उसी से, हमें अपने भीतर के वचन से भर जाना है और उस वचन के अनुसार जीना है।अन्यथा, आप बाइबल को हाथ में लेकर नहीं जी सकते। जो कुछ भी जीना है उसे प्रवेश करना होगा। यह जीवित होना चाहिए और अंदर जाना चाहिए। फिर आत्मा को समर्पण करो। जितना अधिक वचन जीवन है, उतना ही वह आत्मा के अधीन है। तब यह कहा जा सकता है कि यह जीवन की प्रचुरता है। ऐसे वे हैं जो परमेश्वर के आत्मा के द्वारा चलाए जाते हैं। वे निश्चय ही कह सकते हैं, मैं परमेश्वर की सन्तान हूँ। इसमें कोई शक नहीं। इसे कोई और भी कह सकता है। परमेश्वर को पिताजी करके कोई भी कह सकता है। जैसा आप आप सड़क पर बूढ़े लोगों को पप्पा अप्पाच कह सकते हैं।लेकिन तुम बात में जान लोगे कि बच्चे कौन हैं। आइए रोमियो की पत्रिआठवें अध्याय, पद पंद्रह को पढ़ें। **क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली, कि फिर भयभीत हो परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिस से हम हे अब्बा, हे पिता कह कर पुकारते हैं।** फिर पुत्रत्व की भावना, संसार की आत्मा, दासता की भावना।**परन्तु हम ने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें, जो परमेश्वर ने हमें दी हैं।** हम इसे 1 कुरिन्थियों के दूसरे अध्याय के बारहवें पद में पढ़ते हैं।तब उसे न तो संसार की आत्मा मिली, न और कोई आत्मा, परन्तु परमेश्वर की आत्मा वह आत्मा ही वह आत्मा है जो हमें पुत्रत्व की ओर ले जाती है। हम शिशुओं के रूप में पैदा होते हैं। फिर हम आध्यात्मिक विकास के माध्यम से इस पुत्रत्व तक पहुँचते हैं।गलातियों चौथा अध्याय पहला पद **मैं यह कहता हूं, कि वारिस जब तक बालक है, यद्यपि सब वस्तुओं का स्वामी है, तौभी उस में और दास में कुछ भेद नहीं।** फिर वह नाम का उत्तराधिकारी है। **मैं यह कहता हूं, कि वारिस जब तक बालक है, यद्यपि सब वस्तुओं का स्वामी है, तौभी उस में और दास में कुछ भेद नहीं।** तब विकास जरूरी है। *Sonship* भी जरूरी है।इसी तरह, हमारे अधिकारों को विकास की जरूरत है। या सिर्फ कागज पर पड़ा है। अनुभव नहीं किया जा सकता।कई की कानूनी स्थिति कागज पर है।वारिस नहीं हुवा । रोमन आठवां अध्याय सत्रहवाँ पद्य **और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जब कि हम उसके साथ दुख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं॥** पन्द्रहवें पद में कहते हैं **क्योंकि तुम को**

**दासत्व की आत्मा नहीं मिली, कि फिर भयभीत हो परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिस से हम हे अब्बा, हे पिता कह कर पुकारते हैं।** और फिर सोलहवेंवाक्य में कहते हैं **आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्ता** यह आत्मा है जो भीतर बोलती है, हमारे भीतर एक आध्यात्मिक दुनिया है।आध्यात्मिक दुनिया में परमेश्वर की पवित्र आत्मा है, हमारी आत्मा मानव आत्मा है, फिर हमें जीने के लिए जो कुछ भी चाहिए वह वहां है। फिर इफिसियों के पहले अध्याय के तीसरे पद में **हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उस ने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है।** जो इसके लिए प्यासे हैं, जब यह दिया जाएगा, वे इसे एक-एक करके, हर दिन पाएँगे। परमेश्वर की आत्मा और परमेश्वर के वचन से भर देंगे। हमारा हृदय में स्वर्ग की सभी आत्मिक आशीषों से भर जाएगा। ,अपने आप में होना। तो वही हमें वह सब कुछ देता है जो हमें जीने के लिए चाहिए। हमें अपने घर में कुछ बनाना हो, घर पर ही कुछ चाहिए, दूकान में बोलकर घर में बैटेजा तो , नहीं होगा ,तो यहां खाना नहीं बनेगा। जब मैं यहां के सारे जीवन का आनंद लेने के बाद वहां जाता तो पास स्वर्ग में सब कुछ होता है। यह एक सुनहरी पगडंडी है। स्वर्ग के बारे में कई मिथ्या हैं। आध्यात्मिक जीवन यहाँ नहीं होता है तो हमें यहां रहना चाहिए, हम आत्मा से भरना चाहिए, हमें आत्मा का पालन करना चाहिए और आत्मा की आज्ञाकारिता में रहना चाहिए, हमें वह संग्रहित करना चाहिए जो आत्मा हमें प्रदान करता है। तब वह संचार बहुत स्पष्ट होना चाहिए। यह एक महत्वपूर्ण संचार है। छोटे बच्चे, तुम परमेश्वर का सन्तान है हमें वैसे नहीं रहना चाहिए जैसे इस संसार का लोक रहता है। आओ रोमियो की पत्रीअध्याय आठ पद सत्रह पढ़ें **और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जब कि हम उसके साथ दुख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं** फिर जब हम मसीह के वारिस बन जाते हैं, तो हमें उसी रास्ते पर चलना होता है जो मसीह ने अपनाया था। प्रेरित पौलुस ने इसे अच्छी तरह समझा। फिलिप्पियों को लिखे पत्र का तीसरा अध्याय उसी के अनुसार लिखी गई उनकी प्रार्थना है। तब मसीह के संगी वारिस सब अपने हाथ उठाएंगे।अधिक क्या है? मसीह के साथ संयुक्त वारिस। लेकिन *Pastor* वहीं रुक जाती है। मैंने अक्सर इस पर गौर किया है। निम्नलिखित वाक्यों को बिल्कुल नहीं पढ़ा जाएगा। बहुत से लोग यह सही कहते हैं तो दुनिया के एक क्षेत्र के बारे में सोचते हैं। जब हम कहते हैं कि हम मसीह के वारिस हैं, तो हम सांसारिक क्षेत्र में सोच रहे हैं। फिर ताली बजती है और सब उछल पड़ते हैं। परन्तु यहाँ वचन में कहा गया है कि ये सब स्वर्गीय अधिकार हैं।क्योंकि हमें इसवास्तविकता पर आना चाहिए कि हम स्वर्गीय प्राणी हैं। तब यह संसार नहीं है जो हमें आकर्षित करता है। दुनिया पर हमारी आंखें बंद हैं। उन्होंने स्वीकार किया कि पुराने नियम के विश्वासी स्वयं अजनबी और विदेशी थे। उनका अधिकार

यहां नहीं है। उनके पास यह भावना है कि यह स्वर्गीय है। इब्राहीम को एक ऐसे देश में लाया गया जहां वह स्वर्ग को देख सकता था, अगर इसे वादा किया हुआ देश कहा जाता है। जब मैं वहां आया तो मुझे एहसास हुआ कि यह असली नहीं है।आप इसे वहां क्यों लाए? स्वर्ग दिखाई देता है। यह वहाँ था कि स्वर्गीय प्रकट हुआ था।जब कनान की विरासत की बात आती है, तो यह सब त्याग का क्षेत्र है।फिर हमें अपने जीवन में यह भी याद रखना चाहिए कि आज जब हम धरती पर होंगे तो परमेश्वर हमें परमेश्वर द्वारा नियुक्त स्थान पर लाएंगे और वहां दिखाएंगे, हमारी आंखें खुल जाएंगी।अब तक, दुनिया देखती रही है। विश्वास का बपतिस्मा प्राप्त किया, बपतिस्मा लिया सभाओं और सभाओं में जाना लेकिन दुनिया देख रही है  हम परमेश्वर के नियुक्त स्थान की यात्रा नहीं करते हैं। यह हमें आत्मा की आज्ञाकारिता में लाएगा और हमें दिखाएगा, स्वर्गीय क्या है? वे वही हैं जो संसार को त्यागने के लिए तैयार हैं। वे स्वर्ग को देखते हैं। वे देखते हैं कि उनके वास्तविक अधिकार क्या हैं। ये वही हैं जो *Apostal* की तरह हर चीज़ को कूड़ा समझते हैं।यीशु मसीह के ज्ञान की श्रेष्ठता के कारण, जब हम उस ज्ञान के दायरे में जाते हैं, तभी हम अपने स्वर्गीय अधिकारों को देखना शुरू करते हैं। जब हम स्वर्गीय अधिकारों को देखने लगते हैं, तो हम त्याग करने लगते हैं।और कोई संसार नहीं है। दुनिया से हम निकले हैं, आजादी मिल रही है। परमेश्वर के राज्य के दृष्टान्त में, एक व्यापारी बड़े मूल्य के मोती की खोज में चलता है। अंत में उसे पता चलता है। लेकिन अगर वह इसे प्राप्त करना चाहता है, तो वह इसे तभी प्राप्त कर सकता है जब वह अपना सब कुछ बेच दे। इस के बाद  वह खरीद लिया , जैसा कि कहा गया है कि हमें इसकी तलाश करनी चाहिए, आत्मा की आज्ञा के अधीन आओ। आत्मा हमारा मार्गदर्शन करेगी फिर इसे स्टेप बाय स्टेप दिखाया जाएगा। और फिर,अगला भाग आठवाँ अध्याय सत्रहवाँ पद **और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जब कि हम उसके साथ दुख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं॥** हमें यह देखना होगा कि वचन के माध्यम से वह पीड़ा क्या है। हम कहते हैं कि जब कोई कार दुर्घटनाग्रस्त हो जाती है, जब हम अपना घर खो देते हैं या जब हम अपनी नौकरी खो देते हैं, तो हम इसे पीड़ा कहते हैं। हमारी भावनाओं के कारण होने वाले कष्ट कुछ भी नहीं हैं।  परन्तु जब हम मसीह के ज्ञान में बढ़ने लगेंगे, तो हमारा अपना परिवार हमारे विरुद्ध हो जाएगा। हमारे जीवन में कुछ ऐसा होगा जो पहले कभी नहीं हुआ। तिरस्कार, विदाई। मत्ती दसवें पद का पाँचवाँ अध्याय **धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।** छठे वाक्य में **धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे।** भूखे-प्यासे और प्रार्थना की। हमें क्या मिला? **धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।**

मसीह के साथ कष्ट सहने की महिमा। क्या ये जरूरी है? आवश्यकता है जैसे यीशु ने मृत्यु का आनंद लिया, वह उसके साथ यात्रा करेगा जैसे उसने इसका आनंद लिया।
क्योंकि इसके अंदर स्वाद होता है। इसमें कुछ खास है। "उन्होंने मुझे कई सिद्धों के साथ जुड़ने और प्रशंसा करने के योग्य बनाया है कि मैं पीड़ा, भूख, नुकसान, नग्नता में यीशु की तरह हूं।" रोमियो की पत्री 5:3 **केवल यही नहीं, वरन हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज।ओर धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है।** मैं क्लेश में भी स्तुति करता हूं। जब आत्मा आध्यात्मिक रहस्योद्घाटन प्राप्त करती है, दुख को एक महान खजाने के रूप में गिना जाता है जब कोई आत्मा में वचन के छिपे रहस्यों को प्राप्त करना शुरू करता है। अवमानना एक महान धन के रूप में गिना जाता है। यदि मूसा ने इसे पुराने नियम के युग में प्राप्त किया था, तो हम नए नियम के विश्वासी कितने अधिक हैं! इब्रानियोंकी पत्री ग्यारहवाँ अध्याय छब्बीसवें पद **और मसीह के कारण निन्दित होने को मिसर के भण्डार से बड़ा धन समझा: क्योंकि उस की आंखे फल पाने की ओर लगी थीं।** उसने गिना। दूसरे पद्य में रोमियों छठा अध्याय इसलिए, पाप के लिए मरो और परमेश्वर के लिए मसीह के साथ जियो।पीड़ा हो, भूख हो, तिरस्कार हो, संघर्ष हो, उपेक्षा हो, संसार का जो भी हाल हो, उसके बीच की वह यात्रा, हम अनंत काल में उस महिमा की यात्रा पर हैं। पर्दा हटने पर ही सब कुछ जानना संभव है। जब वह परदा जो संसार है और वह परदा जो शरीर है, वचन और आत्मा की सामर्थ्य से हटा दिए जाते हैं, तो आत्मिक आंखें और हृदय की आंखें ज्योतिर्मय हो जाएंगी और वे आंखें यह जानने के लिए खुल जाएंगी कि परमेश्वर की आशा उसकी पुकार यहाँ है और यह जानने के लिए कि उसकी विरासत की महिमा यहाँ संतों के बीच है।वह परिस्थितियों को नहीं देखता, वह परिवेश को नहीं देखता, वह उन ताकतों को नहीं देखता जो उसके खिलाफ आती हैं, बल्कि उस लक्ष्य को देखता है जो उसके सामने है। इब्रानियों की पत्री बारहवें अध्याय के दूसरे पद में कहते हैं **और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिस ने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्ज़ा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा।** के साथ पहले वाक्य में **इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकने वाली वस्तु, और उलझाने वाले पाप को दूर कर के, वह दौड़ जिस में हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें।** वह वैसे भी नहीं दौड़ रहा है, वह लगातार दौड़ रहा है।दूसरा तीमुथियुस के चौथे अध्याय के सातवें पद में प्रेरित अपने जीवन के अंत में कहता है **मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रखवाली की है।**फिर उस दौड़ को पूरा करने के लिए जो हमारे सामने विश्वास और स्थिरता के साथ रखे गए हमारे स्पष्ट अधिकारों को देखकर दौड़ते हैं, वे उसे प्राप्त करने और लेने में सक्षम होते हैं। जब

हम कहते हैं कि मसीही जीवन नहीं है, तो यह पानी पर लिखने जैसा है।हम जो चित्रित करते हैं उसमें कोई वास्तविकता नहीं है। आइए हम खुद को विनम्र करें। रोमियो की पत्री(8:17) **और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जब कि हम उसके साथ दुख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं॥** अपनी जिंदगी जिएं। आत्मा के अनुसार जीवन स्वतंत्रता के साथ जीवन वह जीवन है जो जीवन की आत्मा की व्यवस्था में पाप और मृत्यु की व्यवस्था पर विजय प्राप्त करता है। वे जीवन जो परमेश्वर की बुलाहट की महानता को समझते हैं और आत्मा का पालन करते हैं और वचन के सत्य के महल में रहते हैं, वे ही इन अधिकारों तक पहुंच की ओर ले जाते हैं। आइए हम इसके लिए खुद को विनम्र करें प्रभु परमेश्वर आप सबका भला करे।

## तथास्तु

For Technical Assistance
Amen TV Network
Trivandrum,Kerala
MOb : 999 59 75 980
755 99 75 980
Youtube : amentvnetwork
www.amentvnetwork.com

Contact
Pastor.Benny
Thodupuzha
MOb: 9447 82 83 83